

भारत समेत दुनिया के सभी देशों के लिए आज कल एक चिंता का विषय बन गया है जिसे Global Warming कहा जाता है। इसका अर्थ है विश्व के औसत तापमान में वृद्धि। इसका सबसे बड़ा कारण है मांसाहार का चलन। ये मांसाहार हमें किस अधोगति में धकेल सकता है आइए जानें भाई राजीव दीक्षित जी से। प्रस्तुत लेख [भाई राजीव दीक्षित जी](#) के एक भाषण का लिखित स्वरूप है जिसमें मुख्य बिंदुओं की संक्षेप में चर्चा की गई है। आप इस व्याख्यान को स्वयं भाई राजीव जी के श्रीमुख से नीचे दिए गए लिंक पर भी सुन सकते हैं।

https://docs.google.com/file/d/0B8n_36gK-KF4N1BwY3lremIxYWc/edit?usp=sharing

आज से सौ साल पहले जो विश्व का औसत तापमान था उसमें अब तक 2 डिग्री की वृद्धि हो चुकी है! वैज्ञानिकों का कहना है कि अगर इसी तरह तापमान बढ़ता रहा तो अगले 20-25 वर्षों में विश्व के कई देश पानी में डूब जायेंगे! उत्तरी ध्रुव और हिमालय के glacier पिघलने का डर है जिसके कारण समुद्र का स्तर ऊपर उठ जाएगा और कई देशों समेत भारत के किनारे बसे लगभग 2 लाख गाँव डूब जायेंगे! इसके अलावा तापमान बढ़ने से ऋतुओं का चक्र बिगड़ जाएगा क्योंकि सभी ऋतुएँ एक दूसरे पर निर्भर होती हैं जैसे जितनी गर्मी होगी उतनी ही बारिश होगी और जितनी बारिश होगी उतनी ही सर्दी पड़ेगी। यदि इनमें से एक भी ऋतु असामान्य होती है तो उसका सीधा असर उस ऋतु में पैदा होने वाली फसल पर पड़ेगा और खाने के लाले पड़ जाएँगे!

दुनिया के 156 देशों ने मिलकर एक बैठक की जिसमें मुद्दा था कि विश्व के औसत तापमान या ग्लोबल वार्मिंग को कैसे रोका जाए। इस बात पर शोध करने के लिए वैज्ञानिकों की एक टीम का गठन हुआ जिसमें एक भारतीय वैज्ञानिक ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और उनका नाम था श्री आर के पचौरी। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में लिखा कि दुनिया में गर्मी बढ़ाने वाले घटकों में से अक्वतल है लोगों की मांसाहार जीवनशैली! समस्त विश्व में होने वाली इस समस्या में मांसाहार का 25% योगदान है। 18% ग्लोबल वार्मिंग बढ़ रही है अनावश्यक यातायात के कारण होने वाले प्रदूषण से। बाकी बचा हुआ हिस्सा है औद्योगिक, जीव जंतुओं समेत अन्य कई घटकों का। इनमें से 32% गर्मी पैदा होती है अनावश्यक उत्पादनों में जिनके बिना भी आप जी सकते हैं जैसे Air conditioner, fridge, TV आदि। 18% गर्मी पैदा होती है आवश्यक उत्पादनों में जैसे खेती आदि। 25% गर्मी पैदा होती है अकेले मांसाहार से! बची 25% गर्मी पैदा होती है आवश्यक और अनावश्यक यातायात और उद्योगों से।

मांसाहार के लिए मांस उत्पादक देशों से मांस को दूसरे देशों में पहुँचाया जाता है। इस प्रक्रिया में खूब सारा ईंधन खर्च होता है। फिर बूचड़ खानों से प्राप्त मांस को preserve रखने के लिए कम तापमान दिया जाता है जिसमें बहुत सारा ईंधन खर्च होता है क्योंकि यह व्यवस्था वातानुकूलित होती है। यदि मांस की मांग दुनिया में खत्म हो जाए तो सीधे तौर पर इसके रख रखाव में खर्च होने वाला ईंधन भी बच जाएगा! फिर प्रश्न उठता है कि अगर सबने मांस खाना छोड़ दिया तो क्या दुनिया में इतना अन्न है जिससे सभी का पेट भर सके? उत्तर है हाँ! भारत और चीन जैसे घनी आबादी वाले देशों समेत पूरी दुनिया में इतना अन्न उगाया जाता है कि उससे 1300 करोड़ से ज्यादा लोगों का पेट भरा जा सकता है जबकि पूरे विश्व की आबादी वर्तमान में 700 करोड़ भी नहीं पहुँच पायी है!

आपको जानकर यह आश्चर्य होगा कि जितना अन्न उगाया जाता है उसमें भारत जैसे प्रगतिशील राष्ट्रों में 40% अन्न जानवरों को खिलाया जाता है (यह एक औसत आंकड़ा है)। वहीं अमरीका जैसे विकसित देशों में इसकी दर है 70%! यह अतिरिक्त अन्न जानवरों को इसीलिए खिलाया जाता है ताकि उनके शरीर में माँस की वृद्धि हो। जितना ज्यादा माँस होगा उतना ही अधिक मांस विक्रेताओं को लाभ होगा। यही मानवोपयोगी अन्न जानवरों को खिलाने से मानव के लिए अन्न कम पड़ जाता है। 70% तथा 40% का औसत निकालेंगे तो 55% निकलेगा अर्थात् पूरी दुनिया में 55% अनाज पहले जानवरों को खिलाया जाता है और फिर उनका मांस खाया जाता है। जरा सोचिए, इससे कहीं अच्छा हो अगर यही 55% अन्न हम लोग खाएं तो कितने जानवर तो कटने से बचेंगे ही साथ ही विश्व पर गहराता ग्लोबल वार्मिंग का खतरा भी कम होता! अब प्रश्न यह उठता है कि फिर ये जानवर क्या खायेंगे? उत्तर है कि उसके लिए प्रकृति ने ही सब व्यवस्था की हुई है। उदहारण के तौर पर मानव गेंहू के ऊपर वाले हिस्से को खाता है जबकि जानवर उसके नीचे वाले हिस्से को जो कि घास का दूसरा रूप है, नैसर्गिक तौर पर खाते ही हैं। यह मात्रा में भी ज्यादा होता है और जानवरों के लिए भक्ष्य भी है। इसीलिए प्रकृति ने जो व्यवस्था की है उसमें किसी भी तरह की छेड़ छाड़ के बिना मनुष्य और जानवर का पालन पोषण और बेहतर ढंग से हो सकेगा!

पूरी दुनिया में माँस का कुल वार्षिक उत्पादन 28 करोड़ 50 लाख मेट्रिक टन है जिसे मांस उत्पादक 2050 तक बढ़ाकर 48 करोड़ मेट्रिक टन करने की कोशिश में हैं अर्थात् वे समस्त प्राकृतिक तंत्र और मानव जाति के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह खड़े कर रहे हैं! विश्व के 16 देशों में मांस का उपभोग 60% है तथा भारत समेत विश्व के 186 देशों में मांस की खपत 40% है। मुर्गे के मांस का वार्षिक उत्पादन 9 करोड़ मेट्रिक टन है, सूअर के मांस का वार्षिक उत्पादन है 10 करोड़ मेट्रिक टन तथा

गाय के मांस का वार्षिक उत्पादन 6 करोड़ 27 लाख मेट्रिक टन है। इस सबके लिए प्रतिवर्ष 56 अरब जानवर काट दिए जाते हैं! अकेले भारत में गाय के मांस का कुल वार्षिक उत्पादन 58 लाख मेट्रिक टन है।

दुनिया में कुल 650 करोड़ की आबादी है। एक सर्वेक्षण के अनुसार 200 करोड़ लोग बुखमरी के शिकार हैं जिनमें से 40000 लोग प्रतिदिन भूख से मर जाते हैं! संयुक्त राष्ट्र संघ (United Nations) की एक संस्था FAO (Food and Agriculture Organization) ने एक सर्वेक्षण से पता लगाया कि यदि दुनिया में मांस की मांग 10% भी कम हो जाए या कहें कि दुनिया के मांसाहारी अगर 10% मांस खाना कम कर दें तो पूरी दुनिया में कोई भूख से न मरे! इसका कारण यह है कि 10% मांस की कटौती से जो अन्न बचेगा वो surplus होगा।

सारी दुनिया में जितना प्रदूषण हो रहा है उसका एक बड़ा कारण जंगलों का तेज़ी से कटना है! जंगलों को जिन कारणों के लिए काटा जाता है उनमें से एक बहुत बड़ा कारण है मांस के रख रखाव के लिए लकड़ी की आवश्यकता। यही नहीं मांसाहार का एक और दुष्प्रभाव है जो दुनिया में एक और समस्या को जन्म देता है जिसको जल संकट कहते हैं! दुनिया में यदि कोई उद्योग ऐसा है जहाँ सबसे अधिक जल व्यय किया जाता है तो वो है मांस का उत्पादन। एक किलो गेहूँ के लिए 1500 लीटर, एक किलो चावल के लिए 5000 लीटर तथा एक किलो मांस के उत्पादन में 70000 लीटर पानी का उपयोग होता है। ये आंकड़े हैं FAO (Food and Agriculture Organization) के जो United Nations की ही एक संस्था है। अगर इसे दूसरी तरह से समझा जाए तो एक किलो मांस पैदा करने में जितना पानी लगता है उतने पानी में एक आदमी प्रतिदिन 6 मिनट की दर से लगातार 6 महीने नहा सकता है या एक आदमी प्रतिदिन 2.5 लीटर की दर से 70 साल तक पानी पी सकता है! अब आप अंदाज़ा लगाइए कि 28 करोड़ 50 लाख मेट्रिक टन मांस जो पूरी दुनिया में एक साल में पैदा किया जाता है, उसमें कितना जल लगता होगा?? एक अंदाज़ा मैं आपको देता हूँ - ये इतना पानी है जिसमें सारे भारत वासी एक साल नहाने और खाने में खर्च करते हैं वो भी बिना किसी कंजूसी के!!

भारत में 14 करोड़ लोग ऐसे हैं जिन्हें अपनी दिनचर्या के लिए पर्याप्त पानी ही नहीं मिलता! कहीं सूखे की मार है तो कहीं प्रशासन की लापरवाही। आप टीवी पर भी देखते होंगे आज कल महाराष्ट्र के गाँव कैसे जलसंकट से जूझ रहे हैं! इन परिवारों की माताओं और बहनों का लगभग सारा दिन जल की व्यवस्था में बीत जाता है। मटका उठाये इन महिलाओं को बहुत दूर दूर जाना पड़ता है। अगर सारी दुनिया में यह संकट गहरा गया तो इसी जल के लिए युद्ध हुआ करेंगे और फिर पशुता का और

अध्याय आरंभ होगा! इसीलिए मांसाहार पर लगाम कसना सारी मानव जाति का पहला कर्तव्य अब हो चला है।

आप कल्पना कीजिए कि किसी ने आपकी गर्दन को रेत दिया है। ऐसी स्थिति में आप स्वाभाविक तौर पर चीखेंगे ही साथ ही आपके शरीर में आश्चर्यजनक परिवर्तन होंगे जैसी पसीना छूटना, कंपन होना और हथेली का गीला होना इत्यादि। आप में से शायद कई लोग तो ऐसी कल्पना भी नहीं कर सकते! तो सोचिए कि क्या एक बेजुबान जानवर चुपचाप यह सब सह सकता है? एक बूचड़खाने में गाय और भैंस जैसे बड़े जानवरों पर पहले जीवित स्थिति में 70-100 डिग्री का खौलता हुआ पानी डाला जाता है, फिर उनके शरीर फूल जाने पर उनकी खाल उधेड़ी जाती है, फिर गर्दन पर चीरा लगाकर उनका खून निकाल लिया जाता है और अंत में उनका सिर काटकर सारे अंग निकालकर उन्हें पैक किया जाता है! आप में से कुछ लोगों के लिए उपरोक्त शब्द शायद कष्टदायक होंगे पर यह प्रक्रिया ऐसी ही है। अधिकांश लोग किसी जानवर को काट नहीं सकते लेकिन परोसा हुआ मांस वे खा लेते हैं। ऐसे लोग ये जान लें कि स्वाद के लिए उनकी यही मांग इस उद्योग की जननी है! जब तक आपकी यह मांग जारी रहेगी, क्रूरता का यह चक्र ऐसे ही चलता रहेगा! जिस दिन आप मांस खाना छोड़ देंगे उसी दिन यह मांग कम हो जाएगी और लाभ न होने पर ये उद्योग और क्रूरता दोनों समाप्त हो जाएँगे। मनुष्य होने के नाते हमें उसी मर्यादा में रहना चाहिए जो भगवान ने हमारे लिए निर्धारित की है। ईश्वर ने मनुष्य को शाकाहारी बनाया है और उसके शरीर के अंगों और बुद्धि की रचना भी उसी आधार पर की है। इसका सम्मान करें!

आधुनिक भौतिक विज्ञान जिसे हम अंग्रेज़ी में Physics कहते हैं, उसने ये सिद्ध किया है कि मरते समय किसी भी प्राणी चाहे वो मनुष्य हो या कोई जानवर अगर कराहता हुआ या क्रूरता के कारण मारा जाता है तो उसकी चीख और शारीरिक कंपन से ऐसी तरंगें निकलती हैं जो प्राकृतिक आपदाओं के लिए सीधे तौर पर जिम्मेदार हैं! इस संख्या में जितनी अधिक वृद्धि होगी उतना ही अधिक यह खतरा बढ़ेगा। यही नहीं, इन तरंगों से आस पास के वातावरण जैसे हवा, जल तथा खाने पर भी असर होता है जिसे consume करने पर बाकी लोगों में नकारात्मकता तथा हिंसा के भाव उत्पन्न होते हैं! यह शोध है दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर श्री मदनमोहन और उनके सहयोगियों का। आज पूरे विश्व के वैज्ञानिक इस शोध के परिणामों को स्वीकारते हैं और मानते हैं कि मानव सभ्यता को यदि विनाश से बचाना है तो मांसाहार पर लगाम कसनी होगी!

आजकल अमरीका और यूरोप के देशों में एक नया माँस बहुत प्रचलित हो रहा है जिसे Veal कहते हैं। यह गाय के बछड़े का मांस होता है। जब गाय का बछड़ा एक दिन का होता है तो उसे अपनी माँ

से अलग कर दिया जाता है। फिर उस बच्चे के मांस को burger आदि में परोसा जाता है। ऐसी ही मांस उत्पादक कंपनी के एक कर्मचारी की यदि सुनें तो इस स्थिति में गाय की हालत एक पागल जैसी हो जाती है जब वो अपने एक दिन के नवजात शिशु को अपने पास मौजूद नहीं पाती। वो इतनी हिंसक हो जाती है कि रास्ते में आने वाली किसी भी वस्तु को धराशायी कर दे! आप अंदाज़ा लगाइए कि ऐसी गाय का माँस खाने वाला क्या स्वयं पागल नहीं हो जाएगा?? आखिर इस माँस की कंपनी का भी तो वो मांस के साथ भक्षण ही करेगा! इस गाय की स्थिति भी हमारी माँ जैसी ही है जो हमें अपने पास न पाकर विचलित हो जाती हैं।

गाय का मांस Hamburger में उपयोग होता है। लाल बीफ वाला बर्गर सस्ता होता है और सफ़ेद बीफ़ वाला महंगा होता है। गाय का मांस सफ़ेद रहे और उसमें लालिमा न आए उसके लिए गाय के अंदर का Haemoglobin कम करना पड़ता जिसकी कमी के कारण उसका रंग सफ़ेद पड़ने लगता है। यह ठीक वैसे ही होता है जैसे खून की कमी के कारण हम सफ़ेद पड़ जाते हैं। इसके लिए गर्भस्थ गाय को खाना कम दिया जाता है ताकि उसमें खून की कमी हो और व्यापारियों को लाभ हो! क्रूरता के स्तर की आप कल्पना भी नहीं कर सकते!

पिछले 50 सालों से विश्व में शोध हो रहे हैं कि मांसाहारी जीवन बहतर है या शाकाहारी? इन शोधों के कुछ आंकड़े इस प्रकार हैं - एक शाकाहारी के मुकाबले एक मांसाहारी में कैंसर होने की संभावना 23% अधिक होती है! BP, Diabetes, Heart Attack होने की संभावना 40% अधिक होती है! जहाँ लोग अधिक मांस खाते हैं उन इलाकों में अशांति और हिंसा अधिक होती है। ऐसे इलाकों में लोग अधिक विचलित रहते हैं।

इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि बाड़ों में जानवरों को ठूँसा जाता है जिससे वे तनाव में आ जाते हैं और हिंसक हो जाते हैं। सूअरों को जब बाड़ों में बंद करा जाता है तो वे एक दूसरे की पूँछ काट लेते हैं! यदि हमारे ही घर में जहाँ एक कमरे में दो लोगों से ज्यादा के लिए जगह न हो और वहाँ दस लोग रहने के लिए आ जाएँ तो हम भी कुछ समय बाद तनावग्रस्तता के शिकार हो जाएंगे! ऐसी स्थिति में जब जानवरों का क़त्ल कर दिया जाता है तो उस भावनात्मक स्थिति में भय और तनाव के हारमोस उनके माँस में रक्त के द्वारा मिल जाते हैं जिसे खाकर मनुष्यों में भी वही भाव उत्पन्न होते हैं। जैसा अन्न, वैसा मन!

एक एकड़ जमीन में यदि अन्न उगाया जाए तो उससे 22 लोगों का पेट एक साल तक भरा जा सकता है! वहीं उसी एक एकड़ में उगाए गए अनाज को यदि जानवरों को खिलाया जाए तो उससे जो मांस पैदा होगा वो केवल दो ही लोगों का पेट एक साल तक भर सकेगा! माँस में जितना प्रोटीन होता है उतना ही प्रोटीन दालों में होता है। मांस में जितने मिनरल्स होते हैं उससे कहीं ज्यादा मिनरल्स प्राकृतिक रस जैसे गन्ने का रस, मौसमी-संतरे का रस तथा नारियल का पानी! शाकाहार होने में सारी सृष्टि का लाभ है। अगर कुछ हानि है तो उन उत्पादकों को जो जानवरों पर ऐसी क्रूरता बरतते हैं। वे चाहें तो इससे अधिक धन कृषि और प्राकृतिक संसाधनों से कमा सकते हैं लेकिन उससे पहले लोगों को शाकाहारी बनना होगा क्योंकि उनकी मांग ही ये परिवर्तन लाएगी। यदि आप में प्रत्येक व्यक्ति आज से ही व्यक्तिगत जीवन में मांस खाना छोड़ता है तो इससे पड़ने वाला सकारात्मक प्रभाव बहुत बड़ा होगा - आपके लिए, आपके परिवार के लिए, उनके भविष्य के लिए, देश के लिए, अन्य प्राणियों के लिए और समस्त संसार के लिए!

समस्त संसार के कल्याण की कामना करते हुए!

॥ओउम्॥

काला धन भ्रष्टाचार और व्यवस्था परिवर्तन के महाअभियान भारत स्वाभिमान से जुड़े - स्वामी रामदेव

Join movement against corruption and black money bharat swabhiman - swami ramdev
